**युगपुरुष ब्रह्मलीन महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज के52वीं एवं राष्ट्रसंत महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज की 7वीं पुण्यतिथि साप्ताहिक पुण्यतिथि समारोह**

**18 सितम्बर से 24 सितम्बर 2021**

कथा का समापन

प्रेस विज्ञप्ति

गोरखपुर। कथा। 23 सितंबर 2021। युगपुरुष ब्रह्मलीन महंत दिग्विजयनाथ जी महाराज की 52वीं एवं राष्ट्रसंत ब्रह्मलीन महंत अवेद्यनाथ जी महाराज की 7वीं पुण्यतिथि के अवसर पर चल रहे 'श्रीमद्भगवतगीता के भारतीय सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य में भगवान श्रीराम-श्रीकृष्ण कथा का तात्विक विवेचन' विषय पर आज सातवें दिन समापन के अवसर पर कथा व्यास अनंत श्रीविभूषित जगतगुरु रामानुजाचार्य स्वामी वासुदेवाचार्य जी महाराज विद्याभास्कर ने व्यास पीठ से कहा कि बस एक ही पर भरोसा किया जा सकता है, एक ही से आशा किया जा सकता है, वह हैं हमारे श्री प्रभु, बाकी कोई आपका सहारा नहीं हो सकता इसीलिए प्रभु के गुण का अनुसरण करें। प्रभु तो सदैव मधुर है, मीठे हैं, क्षमाशील है, हमें भी मीठी वाणी बोलनी चाहिए । मीठी वाणी बोल कर सबको बस में किया जा सकता है। प्रभु में अपने मन को लगाए रखो क्योंकि यह मृत्यू लोक है यहां तो पल में भी प्रलय हो जाता है। किसी भी रूप से अपने भगवान से जुड़ जाने से भगवान स्वयं भक्त से जुड़ जाते हैं । दया के समान कोई धर्म नहीं होता है इसीलिए भगवान को दयानिधान कहा जाता है। भगवान तो उधार है । कह कर उन्होंनेष् ऐसो को उदार जग माहीष् भजन गाकर सबको मंत्रमुग्ध कर दिया। ''आज मेरे आंगन में आजा नंदलाल दर्शन की प्यासी गुजरिया श्याम'' इस भजन के माध्यम से नंदलाल भगवान के किशोरावस्था का वर्णन कथा व्यास ने किया। सभी गोपियां उनको अपने घर में, अपने आंगन में बुलाती थी और उनको जी भर के माखन खिलाती थी। भगवान श्रीकृष्ण की चंचलता का वर्णन करते हुए कथा व्यास कहते हैं कि गोपिया जब मटकी में पानी भर कर ले जाती थी भगवान उनकी मटकी को गुलेल से मार कर छोड़ देते। गोपियों को परेशान करने के लिए उनके छोटे बच्चे को जगा देते । इस

प्रकार से भगवान अपने भक्तों को हर प्रकार के आनंद का अनुभव कराते है। भगवान तो परम ब्रह्म परमात्मा है। वे तो हृदय में वास करने वाले हैं, किसकी क्या इच्छा है । यह सब भगवान जानते हैं और उसी के अनुसार उसकी इच्छा पूर्ति करते हैं । कालिया मर्दन प्रसंग के क्रम में उन्होंने फन पर नृत्य करंता, भजो रे मन गोविंदा। भजन सुनाकर श्रोताओं का मन मोह लिया। उन्होंने गोपियों के चीर हरण की कथा के मर्म का भी तात्विक विवेचन किया।

भगवान को किसी प्रकार का अहंकार पसंद नहीं है। भगवान जब गोपियों के साथ रासलीला करते हैं तो गोपियों को अपने सौभाग्य का मद हो जाता है। यह बात भगवान को पसंद नहीं आई तो उन्होंने सोचा कि मैं इन्हें छोड़ कर इनको वियोग दंड देता हूँ। इसी कारण से भगवान एक बार जब गोकुल से गए तो फिर वापस नहीं आए। भागवत के रास पंचाध्यायी के 5 भागवत के प्राण है । उनका चिंतन करने से व्यक्ति को हृदय रोग नहीं होता सकता। इन 5 अध्याय के गोपी गीत का अध्ययन करो तो लगता है कि यह ब्रह्म, इंद्र आदि को परास्त करने वाले कामदेव को जीतने के लिए गाया गया है। रास अध्याय को कामदेव विजय अध्याय भी कहते है।

स्त्रियों की विशेषता बताते हुए कथा व्यास ने कहा कि स्त्रियों की जासूसी जिस प्रकार से स्त्रियां करती हैं उस प्रकार से कोई दूसरा नहीं कर सकता। रासलीला के समय गोपियां भगवान के चले जाने पर भगवान के साथ राधा की उपस्थिति की जासूसी करती थी। राधा रानी उन गोपियों के भाव को समझ कर उनके पास जाती हैं और सब मिलकर गोपी गीत गाते हैं। गोपी गीत का गान करते हुए उन्होंने बताया कि यह गोपी गीत प्रेम की पराकाष्ठा है। इसके भाव को समझ कर जो भक्त इसका गाने करते हैं वो भगवान के अति प्रिय हो जाते हैं। गोपी गीत में विरह की ज्वाला से संतप्त गोपियां भगवान को खोज रही है। वे कहती हैं कि आपके चरण कमलों को छोड़कर तो हमारे कदम आगे नहीं बढ़ रहे हैं। रामावतार में जब ऋषि-मुनियों ने भगवान से उनको आलिंगन के इच्छा जताते हैं। भगवान श्रीराम कहते हैं कि मैं तुम सभी को द्वापर युग में आलिंगन करूंगा, जब तुम सब गोपियों का रूप धारण करोगे। कुछ ऋषिगण कहते हैं कि उस समय द्वापर में कलयुग का स्पर्श होगा इसलिए वह समय ठीक नहीं है तब भगवान क्रोध से उनको वृक्ष और पत्थर होने का

श्राप देते हैं। यही लोग वृक्ष लताओं के रूप में वृंदावन में निवास करते हैं। रासलीला के समय कामदेव भगवान नारायण को पराजित करने के लिए पांचों बाण चलाते है, सब कुछ प्रयास करते है किंतु उसका प्रभाव भगवान के ऊपर नहीं पड़ा, तब कामदेव स्वयं गोपी बनकर जाते है और भगवान उसको भी शर्मिंदा कर देते हैं। वह शरणागत होकर भगवान से प्रार्थना करते है और भगवान के पुत्र के रूप में पैदा होने की कामना करते है  वही भगवान के पुत्र प्रद्युम्न के रूप में जन्म लेते है । रास पंचाध्यायी भगवान के चरणों की तरह गति का उपाय है । इसके नित्य पाठ से हृदय में काम का विकार नहीं रह जाता।

कथा का समापन आरती और प्रसाद से हुआ। संचालन डॉ अरविंद कुमार चतुर्वेदी ने किया। इस अवसर पर महंत सुरेशदास जी, स्वामी राघवाचार्य जी महाराज, योगी कमलनाथ जी, स्वामी विद्याचैतन्य जी, नारायण गिरी जी, राजूदास जी, धर्मदास जी, महन्त रविन्द्रदास जी और यजमान पुष्पदंत जैन, महेश पोद्दार, अजय कुमार सिंह, सीताराम जायसवाल, अरुण कुमार अग्रवाल, विकास जालान, अवधेश सिंह, श्रीचंद बंसल, अतुल सिंह, प्रदीप जोशी, कनकहरि अग्रवाल, मारकण्डेय यादव आदि उपस्थित रहे।